द्वारा

डॉ आशीष सिसोदिया

लोक साहित्य के अध्ययन का इतिहास - भारत में लोकसाहित्य के अध्ययन शृंखला 19 वीं शताब्दी से प्रारंभ हुई जिसमें अंग्रेज अधिकारियों ने प्रशासनिक कार्यों के साथ लोकसाहित्य के संग्राहक और आलोचक के रूप में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। इसके अतिरिक्त ईसाई मिशनरियाँ जो भारत में अपने धर्म के प्रचार के लिए आईं, उन्होनंे भी भारत के विभिन्न प्रांतों की बोली व लोक संस्कृति और साहित्य का ज्ञान प्राप्त कर उसे प्रकाशित भी किया। अंग्र्रजों ने यह अनुभव किया कि यहाँ के भाषा-साहित्य के अध्ययन के बिना शासन और धर्म प्रचार में सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती है। इसी से प्रेरित होकर उन्होंने यहाँ के इतिहास के साथ-साथ भारतीय भाषा-साहित्य के समग्र इतिहास का भी अध्ययन करना प्रारंभ किया।

 भारतीय लोकसाहित्य के अध्ययन का सर्वप्रथम प्रयास 1784 ई. में कोलकाता में स्थापित एशियाटिक सोसायटी आफॅ बंगाल ने किया। इसने भारतीय इतिहास और पुरातत्व के अध्ययन की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया। सन् 1829 में राजस्थान के अनेक देशी राज्यों के रेजीडेण्ट कर्नल जेम्स टाॅड ने लोकसाहित्य लेखन का श्रीगणेश किया। इन्होंने पुस्तक ’एनल्स एण्ड एण्टिक्विटीज आॅफ राजस्थान‘ नामक प्रसिद्ध ग्रंथ लिखा, जिसमें राजपूतों की तत्कालीन सामाजिक दशा, रहन-सहन, आमोद-प्रमोद, वेश-भूषा आदि पर लेखन कार्य किया। इन्होंने राजस्थान में प्रचलित लोक गाथाओं, कथाओं, चारणों के गीतों के आधार पर इतिहास लेखन का कार्य किया।

 इनके अतिरिक्त लगभग पूरे भारत के विभिन्न राज्यों, क्षेत्रों में लोकसाहित्य को लेकर काफी पुस्तकें अंग्रेजी एवं भारतीय विद्वानों द्वारा लिखी गईं। सन् 1871 में चाल्र्स ई. ग्रोवर ने ’फोक सांग्स आॅफ सदर्न इंडिया‘ नामक पुस्तक लिखी, जिसमें भारतीय लोक गीतों का संग्रह है। 1884 में नरेश शास्त्री ने ’फोकलोर इन सदर्न इंडिया‘ नामक पुस्तक लिखी। बीसवीं शताब्दी के द्वितीय दशक तक लोकसाहित्य की सामग्री संग्रहण, संपादन एवं प्रकाशन पाश्चात्य विद्वानों द्वारा किया गया। इस समयावधि में भारतीय विद्वानों द्वारा भी शोधकार्य किया गया लेकिन वह संगठित रूप से नहीं हुआ। इस समय तक भारतीय लोकविद् अपने-अपने जनपदों के लोकसाहित्य की महत्ता को स्वीकारते हुए उसे प्रकाशित करवाते रहे। इनमें दिनेशचन्द्र सेन (बंगाल), शरदचंद्र राय (बिहार), रामनरेश त्रिपाठी (उत्तरप्रदेश), झवेरचन्द्र मेघाणी (गुजरात) के नाम उल्लेखनीय हैं।

हिंदी प्रदेशों के लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोकनाट्य, लोक संगीत प्रदर्शनकारी कलाएँ -

(1) राजस्थान का लोकसाहित्य - राजस्थान दृष्टियों से देश के अन्य प्रांतों और अजूबा है। प्रसंग चाहे भूगोल या इतिहास का हो अथवा शक्ति और भक्ति का या फिर कला तथा संस्कृति का राजस्थान का कोई सानी नहीं। लोकरंगों की जितनी विविधता यहाँ देखने को मिलती हैं उतनी किसी अन्य प्रांत में शायद ही मिले। लोक में प्रचलित इस विपुल और विविध पक्षीय अकूत सम्पदा का अध्ययन एवं अन्वेषण करने से पूर्व हमें लोक और उसकी श्रुति को ठीक से समझना होगा। यह श्रुति चिर पुरातन है तो चिर नूतन भी, इसलिए यह शाश्वत भी है। इस बारीकी एवं गहराई को भी हमें समझना होगा कि हम भारतीय मनीषा को भारतीय आँख से देखें। पराई विदेशी दृष्टि से देखने की हमारी मानसिकता ने अर्थ का अनर्थ ही अधिक किया है। इससे हमारी शब्द शक्ति का बड़ा क्षरण हुआ है।

उदाहरण के लिए हमने अपने ’लोक‘ शब्द को अंग्रेजी के ’फोक‘ शब्द से जोड़ा जाता है जो कि केवल सतही अर्थ है। ’लोक‘ शब्द अपार गहराई लिए हुए है। नाट्य शास्त्र में भरतमुनि ने तो लोक को ’पंचम वेद‘ की संज्ञा देते हुए कहा है कि सारे प्रमाण प्रस्तुत करने के उपरान्त भी यदि किसी बात का विशिष्ट प्रमाण देखना हो तो हमें लोक की ओर उन्मुख होना चाहिए। यह लोक वाचिक परंपरा का महत्वपूर्ण सेतु है। वाचिक परंपरा श्रव्य परंपरा है। इसमें सब कुछ कहन, कथन होता है। यह लोक उस पूरे लोक का समूह है जो इंद्रिय गोचर है। जो कुछ देखा, सुना, चखा, सूंघा और छुआ जा सकता है वह सब इस लोक में सन्निहित है। इतना ही नहीं लोक इससे भी अधिक है जो पराशक्तियों को अपने में समेटे, अलौकिक, रहस्यमय, अबूझ भी है। मनुष्य इसके केंद्र में है, मध्य में है और इसका माध्यम भी है।

भौगोलिक परिचय - राजस्थान भारतवर्ष के पश्चिमी भाग में एक बड़ा राज्य है, जो प्राचीन काल में किसी विशेष नाम से विख्यात नहीं था। इसमें कई इकाइयाँ सम्मिलित थीं, जिन्हें अलग-अलग नाम से जाना जाता था। किंतु जब संपूर्ण भारत में अंग्रेजों का शासन स्थापित हो गया तो उन्होंने शासन की सुविधा के लिए इन देशी राज्यों को एक इकाई मानकर संपूर्ण राज्य को ’राजपुताना‘ नाम दिया। प्रसिद्ध इतिहासकार जेम्स टाॅड ने इस राज्य का नाम ’राजस्थान‘ रखा क्योंकि स्थानीय साहित्य एवं बोलचाल में राजाओं के निवास के प्रांत को ’रायथान‘ कहते थे। इसी का संस्कृत रूप राजस्थान बना। हर्षकालीन प्रांतपति, जो इस भाग की इकाई का शासन करते थे, ’राजस्थानीय‘ कहलाते थे। जब भारत स्वतंत्र हुआ तथा कई राज्यों के नाम पुनः रखे गए तो इस राज्य का नाम भी चिर प्रतिष्ठित नाम ’राजस्थान‘ स्वीकार किया गया तथा इस राज्य में बोली जाने वाली भाषा राजस्थानी कहलाई।

इसके अधिकांश भाग में दूर-दूर तक फैले थार के रेगिस्तान एवं अरावली पर्वतश्रेणी से सुशोभित इसका क्षेत्रफल 342214 वर्ग किलोमीटर है। वर्तमान में क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है। यहाँ की प्रकृति में विविधरूपों के दर्शन होते हैं। भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान को चार भागों में विभक्त किया गया है -

(1) उत्तरी-पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश - राजस्थान में अरावली पर्वत का उत्तरी-पश्चिमी भाग शुष्क प्रदेश है। संपूर्ण राजस्थान की लगभग 58 प्रतिशत भमि इस शुष्क प्रदेश में है। प्रसिद्ध ’थार का रेगिस्तान‘ यही शुष्क प्रदेश है।

(2) मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्र - अरावली पहाड़ी प्रदेश सिरोही में माउण्टआबू से प्रारंभ होकर उत्तरपूर्व में खेतड़ी तक लगभग यह फैला है। डूंगरपुर, उदयपुर, बांसवाड़ा जिले इस क्षेत्र में आते हैं।

(3) पूर्वी मैदान - अरावली के पूर्व में संपूर्ण राजस्थान के 23.3 प्रतिशत भूमि इस भाग में है। इस भाग की भूमि समतल है और यहाँ अच्छी वर्षा होती है। जयपुर, झुंझुनू, अलवर, भीलवाड़ा, टोंक जिले इस क्षेत्र में आते हैं।

(4) दक्षिण-पूर्वी पठारी प्रदेश - कोटा, बूंदी, चित्तौड़गढ़ और झालावाड़ जिले इस प्रदेश में है। यह राजस्थान के 9.6 प्रतिशत भाग में फैला हुआ है। इस प्रदेश को हाड़ौती भी कहा जाता है। इस प्रदेश में नदियाँ सबसे अधिक हैं।